ISSN 0974-8857

तुलसी प्रज्ञा

TULSI PRAJÑĀ

वर्ष 37 • अंक 147 • अप्रैल–जून, 2010

Research Quarterly

अनुसंधान त्रैमासिकी

जैन विश्वभारती विश्वविद्यालय
लाडनूँ - 341 306 (राजस्थान) भारत
JAIN VISHVA BHARATI UNIVERSITY
Ladunu - 341 306, Rajasthan, India

तुलसी प्रज्ञा

ISSN 0974-8857

TULSI PRAJÑĀ

Research Quarterly of Jain Vishva Bharati University

VOL.-147

APRIL - JUNE, 2010

Patron

Samani Dr Mangalprajna

Vice-Chancellor

Editor

Hindi Section

Dr Mumukshu Shanta Jain

English Section

Prof. Jagat Ram Bhattacharyya

Managing Editor

Nepal Chand Gang

Editorial-Board

Prof. Mahavir Raj Gelra, Jaipur

Prof. Satya Ranjan Banerjee, Kolkata

Prof. Arun Kumar Mookerjee, Kolkata

Prof. Dayanand Bhargava, Jaipur

Prof. Frank Van Den Bossche, Belgium

Prof. Bachh Raj Dugar, Ladnun

Dr J.P.N. Mishra, Ladnun

Publisher :

Jain Vishva Bharati University

Ladnun-341306, Rajasthan, India

Research Quarterly of Jain Vishva Bharati University

VOL.-147 APRIL — JUNE, 2010

Editor Hindi
Dr Mumukshu Shanta Jain

Editor English
Professor Jagat Ram Bhattacharyya

Managing Editor
Nepal Chand Gang

Editorial Office
Tulsī Prajñā, Jain Vishva Bharati University
LADNUN-341 306, Rajasthan, India

Publisher : Jain Vishva Bharati University
Ladnun-341 306, Rajasthan, India

Type Setting : Jain Vishva Bharati University
Ladnun-341 306, Rajasthan, India

Printed at : Jaipur Printers Pvt. Ltd.
Jaipur-302 015, Rajasthan, India

Subscription (Individuals) Three Year 500/-, Life Membership Rs. 2100/-

The views expressed and facts stated in this journal are those of the writers. The Editors may not agree with them.

महाप्रज्ञ का महाप्रयाण

आचार्यश्री महाप्रज्ञ जैन तेरापंथ धर्मसंघ के दशम आचार्य थे। 23 मई, 2010, सरदारशहर, चूरू (राजस्थान) में अचानक इस महासूर्य ने अपनी दैहिक यात्रा को पूर्ण विराम दे दिया। महाप्रज्ञ के महाप्रयाण से पूरी मानव जाति दुःख के सागर में डूब गई पर उनके संदेश ने सबको थामा कि आदमी मरता है पर आत्मा नहीं। मैं जा रहा हूँ पर मेरे संदेश, मेरे सपने, मेरे अनुभव सदा तुम्हें रोशनी दिखाते रहेंगे।

महाप्रज्ञ एक नाम था अनेकान्त, अहिंसा, अपरिग्रह और अभय की चेतना के विकास का। उनका प्रबल पुरुषार्थ, अटल संकल्प शक्ति और अखण्ड ध्येय-निष्ठा ने उन्हें सफलता के शिखर पर पहुँचा दिया। वे आर्हत् वाङ्मय के प्रवचनकार थे। जैन आगमों के अनुसन्धाता थे। प्राच्य विद्या के योगक्षेम में समर्पित थे। विद्वद् समाज के बीच हर दर्शन की उलझी गुत्थी को सुलझाने में सिद्धहस्त थे। प्रत्युत्पन्नप्रज्ञा के धनी थे। अप्रमत्तता, जागरूकता, इन्द्रिय संयमितता, पवित्रता उनकी साधुता के सुरक्षा कवच थे।

सम्प्रदाय विशेष से जुड़कर भी उनके निर्बन्ध कर्तृत्व ने राष्ट्रीय एकता और सद्भावना की दिशा में सम्पूर्ण राष्ट्र को संबोध दिया। अहिंसा यात्रा के सारथी बनकर मानवीय मूल्यों की गिरावट को रोकने का प्रयत्न किया। आपसी सामञ्जस्य बनाया। बुराइयों के विरुद्ध लड़ने की संकल्प शक्ति जगाई। सुखवाद और सुविधावाद के विरुद्ध संयम का दीया जलाया। उनका सम्पूर्ण जीवन मानवीय मूल्यों का सुरक्षा प्रहरी था।

आपके विचारों में जीवन का दर्शन था। प्रवचन भीतरी बदलाव की प्रेरणा थी। संवाद जीने की सीख थी। व्यवहार और निश्चय की समन्विति में उन्होंने सदा इसी सूत्र को जीया कि 'रहें भीतर, जीएं बाहर।' इसीलिए आचार्य महाप्रज्ञ अनेक उपाधियों के सौन्दर्य से सजते रहे, मगर उनकी सन्तता हमेशा सत्यं-शिवं की तेजस्विता से दीपित रही। ग्रन्थों के बीच घिरा उनका निर्ग्रन्थ व्यक्तित्व था।

धर्म, दर्शन, कला, साहित्य और संस्कृति की ऐसी कोई विधा नहीं थी, जिस पर लेखनी न चलाई हो अथवा विचारों की प्रस्तुति नहीं दी हो। उनका हर शब्द संबोध बनता, हर चिन्तन विकास की नई संभावनाओं पर हस्ताक्षर करता, उनका हर कर्म रोशनी के नये रास्ते दिखाता। उनके जीवन का आदि, मध्य और अन्त सदैव जागती जोत बन जलता रहा। ऐसे अलौकिक व्यक्तित्व, सृजनात्मक कर्तृत्व और अहिंसक नेतृत्व को शत शत प्रणाम। श्रेष्ठताओं के पुञ्ज, विश्वविद्यालय के अनुशास्ता को शत शत श्रद्धाञ्जलि।

जैन विश्वभारती विश्वविद्यालय परिवार

अनुक्रमणिका / CONTENTS

ENGLISH SECTION

Subject	Author	Page No.
Ācārāṅga-Bhāṣyam, Section - VII	Ācārya Mahāprajña	05
Ācārāṅga-Bhāṣyam, Section - VIII	Ācārya Mahāprajña	07
Environmental Ethics in Western and Jain Philosophy	Samani Rohini Prajña	21
Mahāprajña's Contribution to Anekānta Philosophy	Dr M. R. Gelra	27
Non-violent Consciousness in Abhijñāna Śākuntalam	Dr Samani Satya Prajñā	37

हिन्दी खण्ड

विषय	लेखक	पृ. सं.
जैन धर्म - हिन्दू धर्म	प्रो. सत्य प्रकाश शर्मा	46
अहिंसा की आध्यात्मिक सूक्ष्म व्याख्या	डॉ. अनेकान्त कुमार जैन	54
भारतीय दर्शनों के परिप्रेक्ष्य में जैन-दर्शन में सामान्य की संकल्पना	डॉ. कुसुम पटोदिया	63
जैन आगमों में शिक्षा पद्धति	डा. वन्दना मेहता	68
प्राकृत साहित्य में शालभंजिका एक अध्ययन	डॉ. एच.सी. जैन	78
बंध के प्रकार एवं कारण	सुश्री दर्शना जैन	82

जैन विश्वभारती विश्वविद्यालय, लाडनूँ

प्रकाशन सूची

क्र.	पुस्तक का नाम	लेखक/सम्पादक	मूल्य
1.	आचार्य महाप्रज्ञ का संस्कृत साहित्य	डॉ. हरिशंकर पाण्डेय	550
2.	युग को आचार्य महाप्रज्ञ का योगदान	डॉ. हरिशंकर पाण्डेय/डॉ. जे.पी.एन. मिश्रा	100
3.	अंगुत्तर निकाय भाग-1	श्री श्रीचंद रामपुरिया	50
4.	अंगुत्तर निकाय भाग-2	श्री श्रीचंद रामपुरिया	60
5.	महाभारत परिक्रमा	श्री श्रीचन्द रामपुरिया	60
6.	वासुदेव श्रीकृष्ण	श्री श्रीचंद रामपुरिया	10
7.	श्रमण सूक्त	श्री श्रीचंद रामपुरिया	150
8.	तीर्थंकर वर्द्धमान जीवन प्रसंग	श्री श्रीचंद रामपुरिया	80
9.	आवश्यक निर्युक्ति खण्ड-1	डॉ. समणी कुसुम प्रज्ञा	400
10.	आचारांग और महावीर	साध्वी श्रुतयशा	150
11.	सम्बोधि का समीक्षात्मक अनुशीलन	समणी स्थित प्रज्ञा	100
12.	रत्नपालचरितम	डॉ. हरिशंकर पाण्डेय	100
13.	दूरस्थ शिक्षा की उपयोगिता	डॉ. आनन्दप्रकाश त्रिपाठी	100
14.	नई सुबह	डॉ. आनन्दप्रकाश त्रिपाठी	100
15.	जैन विद्या और विज्ञान	प्रो. (डॉ.) महावीर राज गेलड़ा	300
16.	हरा आँचल	डॉ. आनन्दप्रकाश त्रिपाठी	100
17.	माटी की रक्षा	डॉ. आनन्दप्रकाश त्रिपाठी	100
18.	जैन संस्कृति और जीवन मूल्य भाग-1	समणी ऋजु प्रज्ञा	75
19.	जैन संस्कृति और जीवन मूल्य भाग-2	समणी ऋजु प्रज्ञा	75
20.	जैन संस्कृति और जीवन मूल्य भाग-3	समणी ऋजु प्रज्ञा	75
21.	भिक्षु न्यायकर्णिका	पं. विश्वनाथ मिश्र	120
22.	जैन इतिहास एवं संस्कृति	समणी ऋजु प्रज्ञा	120
23.	जीवन विज्ञान और स्वास्थ्य	डॉ. समणी ऋजु प्रज्ञा / समणी श्रेयस प्रज्ञा	120
24.	योग वैशिष्ट्य	डॉ. जे.पी.एन. मिश्रा	400
25.	जैन तत्त्व मीमांसा और आचार मीमांसा	डॉ. समणी ऋजु प्रज्ञा	120
26.	अर्द्धमागधी साहित्य में गणित	डॉ अनुपम जैन	200
27.	Anekant : Reflection & Clarification	Acharya Mahaprajna	30
28.	Anekant: Views & Issues	Acharya Mahaprajna	30
29.	Lord Mahavir (Vol. 1,2,3)	Shri S.C. Rampuria	1000
30.	Shraman Bhagwan Mahavir Life & Doctrine	Shri S.C. Rampuria	300
31.	Pslam of Life	S. Nath Jain / Ed. Sh. S.C. Rampuria	24
32.	Anekanta- The Third Eye	Acharya Mahaprajna	195
33.	Science in Jainism	Prof. M.R. Gelra	200
34.	The Quest for Truth	Acharya Mahaprajna	195
35.	Sound of Silence	Acharya Mahaprajna	140
36.	Journey into Jainism (Reprint)	Sadhvi Vishrut Vibha	39
37.	Jain Studies & Science	Prof. (Dr.) M.R. Gelra	400
38.	Non-violence Relative Economics and A New Social Order	Prof. B.R.Dugar/Dr. Satya Prajna/ Dr. Samani Ritu Prajna	500
39.	Jain Biology	Late Shri Jetha Lal S. Zaveri / Prof. Muni Mahendra Kumar	200
40.	Teaching of Lord Mahavira	Shri S.C. Rampuria	25

प्रकाशक - सम्पादक - डॉ. मुमुक्षु शान्ता जैन द्वारा जैन विश्वभारती विश्वविद्यालय
लाडनूँ के लिए प्रकाशित एवं जयपुर प्रिण्टर्स, जयपुर द्वारा मुद्रित